PARTICLE

OF

SERVICE-1

आज जो कुछ विषयों के बारे में हम कुछ चर्चा करने की कोशिश करेंगे; ये अनन्त महासागर है एक-एक श्लोक। और यह जो..., जो हम कुछ चर्चा करेंगे, यह इस series के अन्दर इस type की पहली चर्चा होगी और कृष्ण कृपा रही तो इस प्रकार की इसी series में कई चर्चायें होंगी। क्योंकि यह बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है किसी भी व्यक्ति के लिए जो खुश रहना चाहता है। भगवद् गीता का एक श्लोक है अठारहवें अध्याय का तिरसठवाँ (६३) श्लोक।

"इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु।।"

(गीता-१८.६३)

भगवान् कहते हैं - "अब मैंने आपको वो ज्ञान दिया है जो सबसे गुह्यतम् है।", most confidential. *"विमृश्यैतद अशेषेण"* - *'विमृश्य'*, इस पर अच्छी तरह विचार करो; *'एतत्'*, इस पर; *'अशेषेण'*, शेष होता है, 'कुछ शेष न रह जाए।' इस पर इस हद तक विचार करो कि कुछ शेष न रह जाए; अच्छी तरह विचार करो। *'विमृश्यैतद अशेषेण'* - पूर्ण..., जो मैंने बताया है - deliberate on this fully. अच्छी तरह इस पर विचार करो। और फिर भी भगवान् कह रहे हैं - *'यथेच्छसि तथा कुरु'*- "फिर भी वही करो जो तुम्हारी इच्छा हो।"

कितनी गहरी बात है कि भगवान् ने सब कुछ बता दिया है। भगवान् Perfect हैं, Complete हैं; जो ज्ञान दे रहे हैं वह भी पूरा Complete है, Perfect है। Perfect ज्ञान देने के बाद भी भगवान् क्या कह रहे हैं? कि *'विमृश्यैतदशेषेण'* - "मैंने Perfect ज्ञान दिया है, इसके बाद भी तुम इस पर पूर्ण मनन करो, अच्छी तरह सोचो जो मैंने बोला है और उसके बाद भी तुम्हारी जो इच्छा हो वो करो।"

तो हम यह देख रहे हैं इस श्लोक के माध्यम से कि किसी भी स्थिति में भगवान् force नहीं कर रहें किसी को भी। भगवान् किसी जीव की क्षुद्र स्वतंत्रता में बाधक नहीं बनते कभी interfere नहीं करते, किसी भी जीव की स्वतंत्रता में।

यह हम सभी भक्तों के लिए यह बहुत ज़रूरी है। यह प्रचार के अन्दर यह हमें चीज़..., ये चीज़ें clear नहीं होंगी तो हम प्रचार करते हुए काफ़ी frustrated रहेंगे और निजी जीवन में, परिवारिक जीवन में भी। यह बोलना भी कम है। प्रचार या..., वास्तव में ये जो कुछ श्लोक हैं - २.४७, १८.६३, ४.११, ये सब, इसके बगैर तो व्यक्ति खुश हो ही नहीं सकता न, कोई भी scope नहीं है, असंभव है।

भगवान् पूर्ण ज्ञान दे रहे हैं और उसके बाद भी कह रहे हैं कि आपकी जो इच्छा हो आप करो। हमारे इस भौतिक जीवन में हम क्या देखते हैं? हम किसी को कोई बात बताते हैं, पहली बात तो वो perfect होती भी नहीं है। उसके बावजूद भी हम क्या चाहते हैं? "जो मैं चाहता हूँ वो तुम करो"। यही होता है कि नहीं हमारे जीवन में? माँ-बाप बच्चों से चाहते हैं - "जो मैं बोल रहा हूँ तुम वही करो। चाहे मैं सही बोल रहा हूँ या गलत है उससे कोई मतलब नहीं है, पर जो मैं बोल रहा हूँ वही होना चाहिए।"

भगवान् परम पिता हैं, 'परम पिता'। परम पिता होने के बाद भी वे यह नहीं कह रहे कि मेरी बात को तो तुमको मानना ही पड़ेगा। परन्तु हम छोटे से पिता हैं, दो-चार लोगों के पिता हैं और उन्हीं के ऊपर हम इतना प्रभुत्व जमाते हैं; माँ-बाप होने के कारण। या हम कहते हैं - "जो मैं कह रहा हूँ, तुम्हें करना ही पड़ेगा।" और यह भी नहीं कि मैं जो कह रहा हूँ वह सही है, उसमें लगभग chance है कि गलत ही होगा। क्योंकि हम सही रूप से अभी तक दिव्य ज्ञान की अनुभूति..., हमें कोई अनुभूति नहीं है और समझ भी नहीं पाए हैं।

तो हमारे को सीखना चाहिए।

होता क्या है? हम सीखते नहीं हैं जीवन में। हमारे बाल सफ़ेद हो जाते हैं परन्तु दिल काले का काला रहता है। काला मतलब अज्ञान, अज्ञान में। अंधकारमय रहता है - दिल, हृदय, अन्तःकरण। 'We forget learning', है कि नहीं? हम सब सीखना भूल जाते हैं। 'We forget learning. Rather we should learn forgetting.' We forget learning. हम सीखना भूल जाते हैं और करना उल्टा चाहिए हमको। 'माफ़ी करना', वह सीखना चाहिए। भूल जाना चाहिए, माफ़ करना चाहिए। और ये दोनों चीज़े नहीं करते हैं इसलिए दुःखी रहते हैं।

यह भगवद् गीता जो हमने बताई, ABC है Spiritual life की। गीता के अन्दर आपने पढ़ा होगा-

"मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्वतः।।"

(गीता-७.३)

'मनुष्याणां सहस्रेषु'- पहली बात तो कोई हज़ारों-हज़ारों में से कोई एक व्यक्ति है जो कृष्ण भावना-भावित होने की कोशिश करता है और उनमें से कोई विरला ही व्यक्ति

होता है जो सही में कृष्ण-भावना-भावित ढंग से हो पाता है; बहुत विरला व्यक्ति होता है। मतलब भक्ति करने की कोशिश काफ़ी लोग करते हैं पर कोई बहुत ही विरला होता है जो वास्तव में खुश, आनन्द में रह पाता है; आनन्द में, खुशी में रह पाता है हर समय। सामान्यतः हमारी भक्तों की हालत ऐसी होती है कि हम कड़छी की तरह होते हैं जो कि सब्ज़ी के अन्दर डाली और..., बाल्टी में डाली हुई है। तो कड़छी बाल्टी में हर समय है पर उसका स्वाद अनुभव नहीं करती है। हमारा भी है - **हम कृष्ण के साथ कोई न कोई हमारी...,** Kṛṣṇa consciousness **में कुछ न कुछ सम्बन्ध चल रहा है हमारा पर वह अनुभूति हमें नहीं होती आनन्द की।** तो हमें जीवन भर एक कड़छी की तरह बनकर नहीं रहना है कि बाहर से ऐसे ही रहें। हमको अच्छी तरह समझना है इन चीज़ों को।

हम लोगों की यही परिस्थिति - 'जब तक यह नहीं होगा, तब तक मैं खुश नहीं रह सकता', 'जब तक यहाँ नहीं पहुँचुँगा मैं खुश नहीं रह सकता'। सुखी होने के लिए हम, पता नहीं कितने-कितने..., कितनी-कितनी प्रकार से दुःखी होते हैं। आशा क्या होती है? कि हम सुखी रहना चाहते हैं। परन्तु उसी की चाह में हम कितने-कितने प्रकार से दुःखी होते हैं। आश्चर्य है! है कि नहीं? **हम सुखी होने के लिए कितने प्रकार से दुःखी होते हैं।** कारण क्या है? कि हम यह मान बैठते हैं - 'जब तक यह नहीं होगा तब तक मैं सुखी नहीं हो सकता', बस यह bottom line है। यह चीज़ को होना ही पड़ेगा जो मैंने सोचा है इसको, यह चीज़ होनी ही चाहिए तब तक मैं सुखी नहीं हो सकता। यह माया की..., यह माया का एक तरीका होता है। माया का क्या तरीका है हमेशा - 'बस यह कर लो और तुम खुश हो जाओगे', 'बस तुम्हारे बेटे ने तुम्हारी बात मान ली तो तुम बिल्कुल खुश हो जाओगे', 'बस तुम्हें यह वस्तु प्राप्त हो गई, तो तुम बिल्कुल खुश हो जाओगे'।

खुश होना मतलब 'Kṛṣṇa conscious' **होना है।** खुश होना मतलब 'आनन्दमय' होना, आनन्दमय मतलब - 'कृष्णमय' होना। तो अगर आपके लड़के ने आपकी बात मान ली तो आप खुश कैसे हो सकते हो बताओ? कृष्णमय कैसे हो सकते हो अगर आपके लड़के ने आपकी बात मान ली? या आपको BMW गाड़ी मिल गई या आपकी factory पाँच करोड़ की हो गई; उससे आप खुश कैसे होगे, आप बताओ? आनन्द - 'कृष्णमय' होना, इसको खुशी कहते हैं। **आनन्द, खुशी,** peace, happiness **जो है ये परिस्थितिजन्य नहीं हैं; न वस्तु जन्य हैं कि आपको किसी वस्तु की प्राप्ति के बाद ही खुशी मिलेगी, ऐसा नहीं है।** और ऐसा भी नहीं है कि कोई परिस्थिति हो जाएगी तो आपको खुशी

मिलेगी, ऐसा नहीं है। आनन्द, खुशी ये किसी चीज़ की..., किसी बैसाखी के मोहताज़ नहीं है, कि हाँ उसको कुछ लाठी का सहारा चाहिए किसी; आनन्द को, कृष्ण को।

तो हमारे जीवन में अगर हम खुश होना चाहते हैं तो कोई परिस्थिति बाधक नहीं बन सकती, कोई व्यक्ति बाधक नहीं बन सकता। और जीवन में 'अगर' हम खुश नहीं होना चाहते..., हम 'हमेशा' खुश रहना चाहते हैं। हमेशा खुश रहने का मतलब है - 'कृष्णमय' रहना हमेशा। **कृष्णमय रहने का मतलब है जो भगवान् ने हमारे को ज्ञान दिया है उसको हम अच्छी तरह समझें।** और यह जो श्लोक है यह बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है सबके लिए। हमारी सबसे बड़ी बीमारी यही है कि हम हमेशा यह चाहते हैं। भगवान् कह रहे हैं - *"यथेच्छसि तथा कुरु"*, "जैसे तुम्हारी इच्छा हो वैसे करो।" हम सबको कहते हैं- 'जैसे मेरी इच्छा हो वैसे तुम करो', हमेशा। आप परिवार में देखिए..., पति-पत्नी के ऊपर हुकूमत जमाना चाहते हैं, पत्नी चाहती है- 'मेरे अनुसार से पति चले।' पत्नी चाहती है- 'जब मैं मन्दिर जाऊँ तभी तुम जा सकते हो।' या... इस प्रकार से भक्तों के बीच में भी समस्या रहती है। तो यह हमारे को ही इस प्रकार से दुःख मिलेंगे।

जो व्यक्ति जीवन में वर्तमान से खुश नहीं रह सकता, वह कभी भी खुश नहीं हो सकता। Present में जो व्यक्ति खुश नहीं रह सकता, future में कामना है- 'मैं ऐसे होने पर मैं खुशी होऊँगा, ऐसे होने पर सुखी होऊँगा', ऐसा कभी भी नहीं होगा। माया का हमेशा यही चाल है कि खुशी बस एक कदम दूर है, एक कदम और चलोगे फिर लगेगा बस एक कदम दूर है, फिर और कदम चलोगे, ऐसे ही हमेशा खुशी हमारे से दूर जाती रहेगी। जैसे गधे के ऊपर वह, सामने रख दो डण्डी के नीचे carrot, गाजर, तो वह सोचता है - 'अभी मैं करूँगा तो खा लूँगा', वह फिर एक कदम चलता है तो गाजर भी एक कदम और आगे चली जाती है। हमारा यही हाल है, बस ऐसे माया नचा रही है। 'जैसे ही तुम्हारे लड़के ने बात मानी, तुम खुश; जैसे तुम्हारे कमरे में रहने वाले भक्त ने तुम्हारी बात मान ली, तुम खुश'। इससे खुशी नहीं मिलने वाली। खुशी मिलने का मतलब है - 'कृष्णमय होना', इन सब बातों को अच्छी तरह समझना।

हम सब लोग अपने कर्म के फल से इतने आसक्त होते हैं, इतने आसक्त होते हैं, कि इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। कि हमने जो किया है उसका फल जैसे हम चाहते हैं वैसे ही होना चाहिए। कर्म का फल यह मत सोचना कि business कर रहे हैं उससे पैसा - यह तो बहुत ही gross understanding है कर्म के फल की। जैसे मैंने यह बोला है कि ऐसा ही होना चाहिए..., जैसे पति-पत्नी में- 'तुमने tape यहाँ क्यों रख दी है?' पति बोलता है- 'तुम्हारे सिर पर रखूँ क्या?' फिर इसी प्रकार से बिना मतलब के

लड़ाई हो जाती है। 'कई बारी मैंने बोला है, मेरे हिसाब से tape को वहाँ होना चाहिए था, मुझे ठीक नहीं लगा'; बस उसी बात पर युद्धस्थली शुरु हो गई।

यह जो गीता का ज्ञान है यह युद्धस्थली पर दिया गया था, battle field के ऊपर; और battle field के ऊपर ज्ञान देने के बाद भी हमको यह नहीं समझ में आता कि कितनी importance है। यह हमारे को समझ नहीं आती है यह बात। और यह हम नहीं समझते हैं इसलिए हमारा normal जीवन भी युद्धस्थली बन जाता है। ज़्यादातर हमारे जीवन में संग्राम चल रहा होता है। चाहे गृहस्थ में हो चाहे ब्रह्मचारी के कमरे के अन्दर हो; हमारा जीवन युद्धस्थली बना रहता है, नहीं समझते बात को इसलिए। अच्छी तरह समझेंगे तो वास्तव में हम खुश हो सकते हैं।

यह बात कई लोग बोलते हैं कि भक्ति में रहकर सुख नहीं होता, यह बात बिल्कुल गलत है, भगवान् की बात को काटना है। भगवान् गीता में बता रहे हैं नौवें अध्याय के दूसरे श्लोक में-

"राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम्।।"

(गीता-९.२)

यह अत्यन्त सुखपूर्वक सम्पन्न किया जाता है। Kṛṣṇa consciousness जो है यह अत्यन्त सुखपूर्वक सम्पन्न किया जाता है, बहुत खुशी के साथ। भक्ति सही रूप से नहीं कर रहे होते इसलिए हम दुःखी होते हैं। जब हम भक्ति को सही रूप से करना सीख जाएँगे, दुःखी नहीं होंगे। यह गलत understanding है... कई लोग बोलते हैं- "जब से मैं भक्ति कर रहा हूँ तो दुःखी हूँ।" आप सही तरह समझ नहीं पा रहे हो इसलिए दुःखी हो।

और हम ये जो ग्रन्थ पढ़ते हैं..., ग्रन्थ पढ़ने का क्या उद्देश्य होता है? क्या उद्देश्य होता है? ग्रन्थ किसलिए पढ़ते हैं? यहाँ सब लोग किताबें पढ़ते हैं... 'मन की ग्रन्थियों को हटाना', 'ग्रन्थ से निरग्रन्थ होना'। निरग्रन्थ मतलब ग्रन्थी, गाँठे, attachments... ग्रन्थ से निरग्रन्थ होना है। Attachments को हटाना है, यह उद्देश्य है। हम लोग क्या करते हैं? पढ़ते रहते हैं बस..., रोज़ एक घण्टा, दो घण्टा, तीन घण्टा, पर attachment वहीं की वहीं रहती है, कुछ भी हिलता नहीं है..., कुछ भी नहीं हिलता। तो हम पढ़ रहे हैं तो देखना चाहिए कि हमारे दिल की कितनी गाँठें खुल रही हैं; हृदय की कितनी आसक्तियाँ खुल रही हैं। आसक्तियाँ वैसे की वैसी रहेंगी तो हम सही रूप से लाभान्वित नहीं हो रहे। हम यह श्लोक कितनी बारी पढ़ते हैं..., सब लोग जानते हैं - *"यथेच्छसि*

तथा कुरु"। कौन है जो नहीं जानता? सब जानते हैं। जानते हैं पर मानते नही हैं। इनको मानना भी जीवन में शुरु करना चाहिए।

कृष्णमय होने के लिए, खुश होने के लिए हमको उसी रास्ते से जाना होगा जिस रास्ते से सारे संत लोग गए हैं, सब महात्मा जन गए हैं... We have to go through that path, in the same step They have gone through. तो उनकी understanding इन विषयों पर बहुत ही गाढ़ी थी, तब जाकर बहुत आसान, smooth हो रहा है spiritual life. नहीं तो यह understanding ठीक नहीं होती तो बहुत कठिन रहता है आध्यात्मिक पथ पर चलना।

जैसे हमने बताया, कर्म के फल से बड़े-बड़े योगीजन भी आसक्त होते हैं, बड़े-बड़े योगी। कि हम जो कार्य कर रहे हैं वो हमारा..., जो हम जैसा बोलें, वैसा होना चाहिए; बड़े-बड़े योगीजन भी इससे आसक्त होते हैं। तो सोचिए हम कितने आसक्त होंगे? कई लोग सोचते हैं- 'हाँ मैं तो बिल्कुल भी attached नहीं हूँ।' हम कईयों को समझाने की कोशिश करते हैं... 'नहीं मुझे तो ऐसी कोई बात नहीं है, हम तो, हम तो कृष्ण पर dependent हैं।' कृष्ण पर...! तो जो बहुत मेहनत करते हैं वे भी नहीं हो पाते पूरे तरीके से इसमें और हम सोचते हैं कि हम हैं। हमको कितने परिश्रम की आवश्यकता है इस बात को समझने के लिए।

हमने जैसे बताया- योगी भी बड़े, बहुत बड़े-बड़े योगी भी attached रहते हैं कर्म के फल से। कारण क्या होता है? कारण होता है हमारे चित्त, हमारे अंतःकरण पर पड़े हुए संस्कार। **हम सब का चित्त होता है, 'अंतःकरण', जिसे आप heart कह लो, उसके ऊपर संस्कार होते हैं। जो हम चीज़ें चाहते हैं, बारम्बार उसके पीछे attach होते हैं। Attachment के कारण वह छाप पड़ जाती है हृदय में।** जैसे व्यक्ति बहुत गुस्सैल है, क्यों है? कि इतना गुस्सा कर के आदत हो गई है, वह छाप पड़ गई है, तो उसको बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। ऐसे switch on नहीं हो जाएगा कि गुस्सा खत्म, ऐसे नहीं होगा। तो बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। **खराब संस्कार जाएँगे नहीं जब तक, तब तक व्यक्ति बदल नहीं सकता।**

हम सब लोग जो भक्ति में..., क्यों कहा जा रहा है कि सब क्रियाएँ करो? कभी बोला जाता है श्रवण करो, कभी कीर्तन करो, कभी जप करो, कभी सेवा करो, कभी Deity Worship..., क्यों बोला? संस्कार छपें हृदय पर। जब संस्कार positive छप जाएँगे, तो ये सारी गलत जो..., अहम् जमाने की इच्छा, ये सब, तब जाएँगी ये सब चीज़ें। और जब

हम भगवान् के विषय में अच्छी तरह सुनेंगे तो रघुनाथ दास गोस्वामी कहते हैं कि जो भक्ति के नियमों का सही रूप से पालन करोगे तो भगवान् में आपकी आसक्ति बढ़ेगी, तो आपका जो भगवान् के प्रति आपका लोभ बढ़ेगा। तो यह लोभ बढ़ना जो है, यह लोभ 'आत्मा' का विषय है; लोभ बढ़ना भगवान् के विषय में। तो जब लोभ बढ़ेगा भगवद् विषयों में, तब यह संस्कार फ़ीके होंगे। आप लोग समझ पा रहे हैं? समझ पा रहे हैं? जब भक्ति के प्रति लोभ बढ़ेगा, कृष्ण के प्रति लोभ बढ़ेगा, तब हमारे ये जो, जो बाकि संस्कार हैं, ये फ़ीके होंगे। तो हमको लोभ अर्जन करना है भक्ति के प्रति, तब यह चीज़ें फीकी होंगी।

हम लोग क्या करते हैं? हमारा खुद का लोभ अभी नहीं है और हम क्या करते हैं? लोगों को बदलना चाहते हैं। लोगों का मतलब, अपने परिवार को बदलना चाहते हैं। कोई व्यक्ति अपने room mate को बदलना चाहता है। यही करना चाहते है न हमेशा हम? औरों को बदलना चाहते हैं। भक्ति का मतलब है - 'controlling one's mind and senses', अपने मन और इन्द्रियों को control करना। हम हमेशा क्या करना चाहते हैं? Controlling other's mind and senses... चाहे वह हमारा पुत्र हो, हमारी पत्नी हो, हमारे माता-पिता हों, हमारे दोस्त हों, हमारा room-mate हो, हमारे ब्रह्मचारी आश्रम में कोई भी हो। तो हम औरों को हमेशा change करना चाहते हैं। अरे! यह change करने के लिए तो भगवान् और महापुरुष, उनके शुद्ध भक्त आते हैं और वे थक कर वापिस चले जाते हैं।

भगवान् किसलिए आते हैं यहाँ पर? शुद्ध भक्त किसलिए आते हैं यहाँ पर? लोगों के चित्त को बदलने के लिए और वे भी fail होकर चले जाते हैं। नहीं बदलते। तो हमारी क्या औकात है कि हम किसी को बदल दें कि यह ऐसे करे? और हम perfect भी नहीं हैं, अभी तो सबसे बड़ी बात यह है। अभी तो हम perfect नहीं हैं। जो perfect व्यक्ति आते हैं- 'भगवान् और उनके शुद्ध भक्त' अवतरित होते हैं, वे भी आते हैं, कोशिश करते हैं, पर यह नहीं कि सब change हो जाते हैं, ऐसा नहीं है। हम यहाँ पर हैं, इसका यही सबूत है..., कितनी बारी शुद्ध भक्त यहाँ आए हैं, भगवान् आए हैं, आकर चले गए हैं। हम यहीं के यहीं हैं, हमारा चित्त नहीं बदलता। तो ये संस्कार बदलना इतना आसान कार्य नहीं है। हम लोगों को अपने आप को बदलने की कोशिश करनी है, न कि अपने घर वालों को, अपने भाई को, अपनी बहन को, इसको, दोस्त को..., यह ठीक नहीं है। हम हमेशा यही कार्य में लगे रहते हैं- 'बस यह बदल जाए तो मैं खुश।'

हम सब खुश होना चाहते हैं? उसके लिए क्या करना चाहिए? अपने आप को बदलना। करते क्या हैं हम खुश होने के लिए? दूसरे को बदलना। तो अगर वह दूसरा बदल गया तो उसमें आप कैसे खुश होओगे, बताओ? आपकी बात भी मान लें अगर, वह बदल भी जाता है; पहली बात तो वह व्यक्ति बदलेगा नहीं, यह तो confirm है। सबके चित्त पर भीषण, बहुत भयंकर संस्कार होते हैं। अगर वह बदल भी गया, तो उससे आप कैसे खुश होओगे? आपके पुत्र ने अगर आपकी बात मान ली, तो उससे आपकी खुशी का क्या लेना देना है, बताओ? यह माया है, हमेशा एक कदम दूर दिखाती है, 'बस यह होते ही तुम खुश हो जाओगे'। कुछ होते ही खुश नहीं होने वाले हम, जब तक हम कृष्णमय नहीं होंगे।

यह science है। Science को हम अपनी philosophy नहीं, उसमें हम डाल सकते कि नहीं, नहीं। कई बारी लोग बोलते हैं कि, 'बात तो आप सही बोल रहे हो पर actually यह practical life में संभव नहीं है।' Practical life में संभव नहीं है? आपके कहने का मतलब है- Spiritual knowledge और धर्म, ये practical life में संभव नहीं है क्या? तो भगवान् ने व्यर्थ की बातें की हैं 'गीता' में? और वह भी युद्धस्थली के ऊपर? यह practical life में यह धर्म, Spiritual knowledge की बातें हम नहीं अनुकूल कर सकते।

यह क्या... ये कौन... ये क्यों बोल रहें हैं? यह हम ऐसा क्यों सोचते हैं? सोचते हैं न? 'ऐसा नहीं..., पति-पत्नी, ऐसा थोड़े ही न होता है? Expectations तो रहती हैं।' नर आशा ही निराशा का कारण बनती है हमेशा। हमारी लोगों से आशा रहती हैं कि हाँ भई, यह मेरी बात मान ले। हमेशा यही चलता है- 'यह मेरी बात मान ले'। हम कृष्ण की बात न मानें और सारे लोग हमारी बात मानते रहें। बस प्रभुत्व जमाते रहते हैं हम लोग हमेशा।

हमको अपने आपको बदलना है। कृष्ण भक्ति में आए हैं इसका एक ही मतलब है..., कृष्ण भक्ति में वे ही आते हैं जो मानते हैं कि मैं गलत हूँ और मुझे अपने आप को बदलना है। अगर आपको अपने आप को नहीं बदलना तो खुश नहीं हो सकते। क्योंकि इस स्थिति में तो आप अरबों जन्म से हो, खुश थोड़े न हैं हम अभी। तो खुश होना है तो अपने आप को हमें बदलना चाहिए। और कई बारी हमारी..., यह भी हम नियम बनाते हैं कि हम बहुत सारी चीज़ें सुनेंगे, बहुत कुछ Lecture वगैरह सुनेंगे, नियम..., यह हम लोग ritual के अन्दर बंध कर रह जाते हैं सिर्फ़। यह Spiritual life में इससे कोई महत्व नहीं है कि आपने कितना सुना हुआ है, इससे कोई महत्व नहीं है। कितना बुना है अंदर वो, वो चीज़ का main महत्व है। आप सुनते रहो, नहाते रहो, कड़छी को

नहलाते रहो तो इससे कोई, इससे यह नहीं है कि उसको taste मिलना शुरु हो जाएगा; इससे कोई मतलब नहीं है। आपके अन्दर कितना गया है। अन्दर नहीं जा रहा तो फ़ायदा नहीं है..., फ़ायदा नहीं होगा बिल्कुल भी न। कितना सुना है इससे मतलब नहीं है, कितना बुन रहे हैं हम हृदय में, अन्दर से।

आनन्द के लिए बाहर जाने की आवश्यकता नहीं होती है कहीं पर भी। हम लोग हमेशा आनन्द परिस्थिति में, किसी व्यक्ति में, किसी वस्तु में ही ढूँढते हैं आनन्द को, बस। 'इससे मुझे खुशी मिलेगी, इस व्यक्ति से।' किसी से भी आपको कुछ नहीं मिलने वाला। **पहली बात तो change कोई नहीं होगा, दूसरी बात अगर हो भी गया, तो भी खुशी नहीं मिलेगी क्योंकि उसके change होने से आपकी खुशी का कोई relation है ही नहीं।** आप हर एक को देखिए बस। 'मेरे लड़के की शादी हो जाए, तो मैं खुश हो जाऊँगा।' अब हो जाती है उसके बाद क्या होता है? कितने लड़कों की..., कितने लोगों के लड़कों की शादी होती है, क्या खुश हो जाता है व्यक्ति? 'पोते का मुँह देख लूँ।' अरे भई! वह तो कितनों ने देखा है, देखो कितने खुश हैं? ऐसा नहीं होता।

कई बारी देखा जाता है कि..., कई बारी नहीं ..., जैसे interview लिया गया था एक बहुत बड़ी institution ने और पूछा गया कि, 'कितने लोग जीवन में कोई plan बनाकर चलते हैं जीवन में?' कोई कुछ planning करके चलते हैं? तो पता..., पता चला कि ९४% लोग जीवन में कोई भी plan नहीं बनाकर चलते, ९४%... केवल ६% लोग जीवन में कुछ plan बनाकर चलते हैं। और ६% भी जो plan बनाते हैं ..., क्या plan होना है? कि मेरे यह लड़के की शादी कैसे हो जाए, मैं घर कैसे बना लूँ? बस यह planning होती है ६% में भी। **तो जो व्यक्ति जीवन में कोई plan बनाकर भी नहीं चलता, वह खुश कैसे हो सकता है बताइए? आपका plan ही नहीं है कृष्णमय होने का पूर्ण रुप से तो आप कैसे आनन्द में हो सकते हैं जीवन में?** Planning ही नहीं है कोई भी। जब plan ही नहीं बनाएँगे तो सफल कैसे होंगे?

हमें अच्छी तरह planning करनी चाहिए। नहीं तो क्या होता है? कि हम लोग बस यही सोचते हैं- 'ये कार्य हो जाएगा तो मैं खुश होऊँगा', बस। Then we rob ourselves from the sheer bliss of performing the activity... **जो अगर हम यह सोचते हैं कि यह कर के मैं खुश होऊँगा..., तो जो कार्य है..., करने के अंदर जो खुशी होती है, उससे हम अपने आप को...,** 'we rob ourselves', वंचित कर लेते हैं। We rob ourselves from the sheer joy of performing the activity. पता नहीं कैसे explain किया जाए, क्योंकि यह इतने... One has to feel it, you know.

भक्ति का मतलब है कि 'journey is as good as destination...' कितनी बार हमने चर्चा की हुई है..., journey and destination. हम सोच रहे हैं भक्ति के अलावा..., भक्ति भी जब कर रहे होते हैं कि, 'जो मैं यह कर रहा हूँ अगर इससे मुझे यह मिलेगा, तो मैं खुश होऊँगा, तो we are ourselves..., we are always thinking ourselves of the destination..., while going through the journey.

सोचते हैं नहीं..., 'आनन्द मिलेगा ये करने के बाद', यह गलती है। यह activity से आनन्द मिल सकता है, if you are performing for the pleasure of The Lord... अगर भगवान् की खुशी के लिए कार्य करेंगे तो इसी, इसी क्रिया से हमें आनन्द मिलेगा, खुशी मिलेगी। Then our journey and destination..., our destination is not आनन्द, then our journey becomes आनन्द, Happiness. Then we get..., then we, then we don't rob ourselves from the sheer joy of the activity, of performing the activity.

हमेशा याद रखो..., खुश रहना चाहते हो, जो activity है, that is as good as destination..., why? Destination is ānanda, खुशी। And activity कृष्ण की प्रसन्नता के लिए कर रहे हैं, वो भी आनन्द है। क्योंकि हम यह नहीं कर रहे होते इसी वजह से सारी दिक्कत आती है, समस्या आती है।

यह २.४७ और यह १८.६३, इनकी काफी गहराइयों तक हमें जाना पड़ेगा। आप सब लोग बारहवें अध्याय में भी पढ़ते हैं कि भगवान् कहते हैं कि, "सबसे श्रेष्ठ तो यह है कि मन मुझमें लगा दो, नहीं कर सकते तो यह करो, वह करो, वगैरह-वगैरह।" और सबसे श्रेष्ठ क्या है? आपकी जो activity हो, that should be an offering to Me..., जो आप activity कर रहे हो। भगवान् गीता में बारहवें अध्याय में यही बोल रहे हैं - "सर्वश्रेष्ठ है मन मुझमें लगाओ, मेरी बात मानो।" तो जो activity है, that is for the pleasure of The Lord, 'नहीं कर सकते carry? अच्छा यह कर रहे हो न, इसका फल मुझे अर्पण कर दो..., यह कर रहे हो इसका फल मुझे अर्पण कर दो, वगैरह-वगैरह।' तो श्रेष्ठ नहीं है वह कार्य। यह २.४७ यही बता रहा है कि श्रेष्ठ कार्य क्या है? श्रेष्ठ कार्य है कि, 'Activity should be for the pleasure of The Lord'... direct offering होना चाहिए, यह नहीं कि activity कर के offering करें; वो inferior quality है।

Superior क्या है? 'Activity should be for the pleasure of The Lord', that is destination..., ऐसे नहीं कि we do some act and then we offer the result for the

pleasure of The Lord..., ऐसा नहीं होना चाहिए। ये चीज़ें अगर हम लोग नहीं समझेंगे तो हम दुःखी रहेंगे।

हम प्रचार करते हैं। प्रचार करने में हमारा क्या होता है? यह व्यक्ति मेरी बात माने। जबकि भगवान् भी प्रचार कर रहे हैं; भगवान् यह नहीं बोल रहे- "मेरी बात मानो।" भगवान् कह रहे हैं- *"यथेच्छसि तथा कुरु"*, तुम मेरी बात अच्छी तरह सुनो, deliberate on this fully..., *"विमृश्यैतदशेषेण"* -- इसको अच्छी तरह, इसके ऊपर चिंतन करो, मनन करो। हम क्या कहते हैं- "मैंने जो बोला है उस पर चिंतन भी मत करो, जो कहता हूँ तुरन्त मान लो मेरी बात।" चाहे पति पत्नी को बोले, पत्नी पति को बोले, ब्रह्मचारी आश्रम में एक लड़का दूसरे को बोले, "जो मैंने बोला है उसको मान लो बस", यही परम सत्य है। भगवान् कहते हैं- "यह परम सत्य तो है, फिर भी तुम सोच लो, तुम्हारी इच्छा हो तो मानना।"

हम जब प्रचार करते हैं, प्रचार को छोड़ो कोई भी activity करते हैं, तो इतने आसक्त होते हैं- "अच्छा, देना पानी देना", नहीं दिया- "सुनाई नहीं देता, पानी देना बोला था।" इतने आसक्त होते हैं..., हम attach होते हैं अपने फल से। जैसे भी बोला है, वो पूरा होना ही चाहिए..., "तुम्हें सोचने की ज़रूरत नहीं है, बस जो बोल रहा हूँ वही करो।" "मैं भगवान् हूँ- *अहम् सर्वस्य प्रभवो*, सब कुछ मुझसे ही होता है", जैसे सब जीव भगवान् बन जाते हैं।

और यह हमारी आदत क्या है, जैसे मैंने पहले भी बताया हुआ है- 'लेना-लेना'। हम हमेशा सबसे लेना चाहते हैं। तो 'लेना-लेना' जब व्यक्ति होगा..., **संसार में सभी एक-दूसरे से लेना चाहते हैं। इसलिए संसार में कभी प्रेम हो ही नहीं सकता।** किसी व्यक्ति का किसी व्यक्ति से प्रेम हो ही नहीं सकता। माँ बेटे से लेना चाहती है, बेटा माँ से, कोई पति पत्नी से, पत्नी पति से, हर कोई बस लेना चाहता है। तो जैसे ही स्वार्थ पूरा नहीं होगा तो लड़ाई हो जाएगी। इसलिए संसार में कोई खुश नहीं है, क्योंकि हम 'देना-देना' जानते ही नहीं हैं।

'देना-देना' है 'प्रेम', 'खुशी'। जब हम 'लेना-लेना' चाहेंगे तो frustations आते ही रहेंगे हर पथ पर..., हर पथ पर। तो यह हमें सीखना है, 'देना-देना'। That activity should be for the pleasure of The Lord... देना, भगवान् की प्रसन्नता के लिए सारे कार्य करना। हम लोग लेना चाहते हैं कि यह व्यक्ति को मैं ऐसे तिकड़म बाज़ी करके समझा लूँ, चाहे भक्त हो, ताकि ये-ये कर दे, हम भूल जाते हैं। **हम सेवा कर रहे होते हैं,**

क्रोध करना शुरु कर देते हैं, काम पूरा होना चाहिए..., काम पूरा के लिए नहीं कर रहे थे सेवा आप। आप सेवा कर रहे थे कृष्ण की प्रसन्नता के लिए, यह बात को क्यों भूल रहे हैं? सेवा किसलिए करते हैं? कृष्ण की प्रसन्नता के लिए। हम बीच में देखते हैं arguments होती है काफ़ी, devotees arguments करते हैं, वगैरह, यह ठीक नहीं है। क्योंकि कृष्ण की प्रसन्नता उसमें चली गई। आपका यह..., I mean..., you have defeated your own purpose..., क्या purpose था? कृष्ण प्रसन्न होंगे और हम पर कृपा होगी। पर जब हम सेवा करते हुए भी क्रोध करते हैं, कि तिकड़म बाज़ी करते हैं, घुमाना-फिराना, तो कृष्ण की कृपा से वंचित हो जाते हैं, आनन्द से वंचित हो जाते हैं।

काम पूरा हो सकता है, जीत सकते हो, पर जीतकर भी हार जाते हो। और कई बारी हम हार जाते हैं पर हारकर भी जीतते हैं, क्यों? क्योंकि उसमें कृष्ण प्रसन्न हैं। जब कृष्ण प्रसन्न हैं तो आप आनन्दमय अवस्था में रहोगे। हमने काम निकालना नहीं है ज़िन्दगी का उद्देश्य। चाहे भक्ति के अन्दर, चाहे मन्दिर के अन्दर रह रहे हो, चाहे मन्दिर के बाहर; काम निकाल लें किसी तरह, यह नहीं है जीवन का उद्देश्य। कृष्ण प्रसन्न हों हमारी क्रिया से, हमारी activity से। हम भक्ति में भी यही देखते हैं, ऐसा रहता है बहुत।

'भागवतम्' के ग्यारहवें स्कन्द में 'दरिद्र व्यक्ति' की परिभाषा बताई गई है। दरिद्र व्यक्ति वह होता है- one who is not satisified with his life with himself. 'जो संतुष्ट नहीं होता ऐसा व्यक्ति दरिद्र है।' जो संतुष्ट..., one who is not satisified वह व्यक्ति दरिद्र होता है; ग्यारहवें स्कन्द में बताया गया है।

तो हम लोग हमेशा यह सोचते हैं- यह हो जाएगा तो मैं खुश होऊँगा; तो हमेशा हम दरिद्र बने रहते हैं, भिखारी। नहीं! यह जो आप भगवान् की प्रसन्नता के लिए कार्य करते हो, इसी में आनन्द है, इस बात को feel करेंगे तो हम इस बात को execute कर पाएँगे। हम हमेशा क्या करते हैं? हमेशा destination से attach होते हैं हमेशा, फल से। तो हम भगवान् की प्रसन्नता, न प्रसन्नता, कोई लेना-देना ही नहीं है। जिस कारण है भक्ति भी कर रहे होते हैं तथा-कथित, पर उसमें भी हमारा होता है कि जैसे मैं चाहता हूँ, वह हो जाए, तो बस ठीक होगा। ऐसा, ऐसा होता नहीं है असलियत में।

और कई बार लोग बोलते है कि, "नहीं-नहीं प्रभुजी आप जानते नहीं हो, जब घर में रहते हैं न, हम पति-पत्नी होता है, क्या आप चाहते हो वो हो? " ये बातें होती है जब हम family से बात करते हैं। फिर जब हम ब्रह्मचारियों से बात करते हैं- "हम सब जब

room में रहते हैं साथ में न तो..." ये सबकी बीमारियाँ हैं। यह नहीं समझते, हमारे अंतःकरण की बीमारी है यह।

कुत्ते को कहीं पर भी रखो; वह भौंकेगा। व्यक्ति बदलेगा नहीं न। तो चित्त पर जो संस्कार हैं, वह व्यक्ति बदलेगा नहीं, चाहे परिवार के अन्दर रहो, चाहे मन्दिर के अन्दर रहो। तो हमारे चित्त पर ये संस्कार हैं, फल से attached हैं हम लोग। तो यह पति-पत्नी के साथ हों, या बच्चों के साथ माँ बाप हों, चाहे ब्रह्मचारी आश्रम में लड़के हों, ये सब..., ये सब गलतफहमी है। जब परिवार से आसक्त, परिवार के अंदर हम चाहते हैं सब लोग मेरी बात मानें, तो यही बीमारी जब हम भक्तों के साथ हैं तो भी यही चलती रहती है, arguments भक्तों से भी फिर होते हैं। जो व्यक्ति ठीक है वह कहीं पर भी ठीक रहेगा। परिस्थिति जन्य नहीं है किसी की..., किसी की क्रिया..., भक्त की क्रिया। परिस्थिति तो हमेशा ही ऐसी..., कोई हमारी बात मानेगा ही नहीं। क्योंकि हर कोई किसलिए आया है इस संसार में? अपनी unfulfilled desires को पूरा करने के लिए आया है। तो वह आपकी बात मानने के लिए तो आया ही नहीं, चाहे मन्दिर के अंदर रहते हो आप, चाहे बाहर रहते हो, आप कहीं पर भी रहते हो।

हम चाहते हैं सब मेरी बात मानें। 'मेरे बच्चे मेरी बात मानें', बस। 'मेरी पत्नी को मेरी बात माननी ही चाहिए।' 'मेरे कमरे के अन्दर जो भक्त रहते हैं उनको मेरी बात माननी ही चाहिए।' बस यही, यही चीज़ें कर के हम लोग क्या करते हैं? हमने क्या करना है?

From action we have to come to excellence...

२.४७ का यही मतलब है। That is not mere action, that is excellence... वो अपने आप में सिद्धि है, 'कार्य करना बिना फल की आसक्ति के।' This is the direct offering- that action is for the pleasure of The Lord... और आप सोच नहीं सकते, जब हम इस प्रकार से कार्य करते हैं तो the power of that action is mind boggling, you know...? जब यह फल की आसक्ति से हटा हुआ कार्य होता है तो उसकी जो शक्ति होती है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। क्यों कल्पना नहीं की जा सकती? क्योंकि हम आपको बताते हैं...

जैसे आप प्रचार करते हैं, आप किसी को..., जैसे अभी आप कुछ लोग guide बने हैं, या कोई जैसे Lecture वगैरह देते हैं, preachers हैं यहाँ पर काफ़ी सारे लोग ज़्यादातर। तो आप लोग जब प्रचार करते हो तो यह चाहते हो कि व्यक्ति मेरी बात माने। तो यह जब हम इस प्रकार की consciousness से जब हम प्रचार करते हैं तो हमारे से एक

अजीब प्रकार की दुर्गन्धि निकलती है फिर। वह जो ताज़गी होती है वह चली जाती है। दूसरा व्यक्ति..., that person can smell this thing कि यह चाहता है कि मैं इसकी बात मानूँ... That person can smell, immediately... जिसको आप प्रचार कर रहे हो वह व्यक्ति को सुगन्ध आ जाती है कि यह चाहता है..., उसको समझ आ जाती है कि यह चाहता है कि मैं इसकी बात मानूँ। यह नहीं चाहता कि भगवान् की बात मानूँ... उस व्यक्ति को पता चल जाएगा, भले ही बोलेगा नहीं मुँह पर; वह पता चल जाता है। होता क्या है? फिर वह preaching successful नहीं होती है।

परन्तु अगर हम बिना फल की आसक्ति के just for the 'pleasure of The Lord' बोलते हैं, प्रचार करते हैं, तो वे शब्दों में कृष्ण होते हैं। तो ये शब्द होते हैं, वे इतने शक्तिशाली हो जाते हैं कि कृष्ण उनमें हैं। तो,

"प्रविष्टः कर्णरन्ध्रेण स्वानां भावसरोरुहम्।
धुनोति शमलं कृष्णः सलिलस्य यथा शरत्।।"

(श्रीमद् भागवतम्-२.८.५)

भगवान् कर्ण, कानों के माध्यम से दूसरे के हृदय में अंदर चले जाते हैं, तब व्यक्ति बदलता है। क्योंकि उन शब्दों में कृष्ण होते हैं। हम प्रचार करते हैं, हमें अपने ऊपर अहंकार होता है, 'मैंने बोला तो बदला', यह बेवकूफी है। *"प्रविष्टः कर्णरन्ध्रेण"*, भगवान् कानों के माध्यम से जब अंदर जाते हैं तो व्यक्ति बदलता है, केवल "कृष्ण" ही बदलते हैं किसी को भी। आप या हमारे शब्द नहीं बदलते, शब्दों से कोई नहीं बदलता। "कृष्ण" की वजह से व्यक्ति बदलता है। तो जब हम इस तरीके से बोलते हैं कि फल से बिना आसक्त हुए सिर्फ़ भगवान् की प्रसन्नता के लिए, तो उन शब्दों में "कृष्ण" प्रवेश कर जाते हैं। और फिर वे जब शब्द किसी के हृदय में जाते हैं, वे बदलते हैं। इससे हम अहंकार से भी निवृत्त हो सकते हैं कि, 'मैंने प्रचार किया।' आपने कुछ नहीं किया। आपने भगवान् की बात अच्छी तरह समझे हो कि उनकी प्रसन्नता के लिए कार्य करना चाहिए। बदला "कृष्ण" ने ही है। कृष्ण कथा ने ही बदला है।

कोई जीव किसी को नहीं बदल सकता, भगवान् ही बदलते हैं। भगवान् परम पवित्र हैं। तो 'as it is' अगर हम परम पवित्र चले जाएँगे तो बदल देंगे। हम उनके साथ अपनी इच्छाओं को मिश्रित न करें, तभी व्यक्ति नहीं बदलता साथ में रहते हुए भी। तो केवल भगवान् की प्रसन्नता के लिए हम कार्य करेंगे तो बहुत शक्तिशाली कार्य होंगे। नहीं तो एक अजीब सी दुर्गन्धि सी रहेगी हमारे आस-पास।

तो हम लोग जैसे हमेशा कहते हैं न- we work for fun; हम खुशी के लिए कोई भी कार्य करते हैं। जैसे business व्यक्ति कर रहा है तो पैसा आएगा तो वह खुश होगा, यह नहीं कि जो business करने का माध्यम है उससे वह खुश हो रहा है। पर जब हम इस प्रकार से इस चेतना में रहेंगे, जैसे हम प्रचार या कोई भी कार्य कर रहे हैं, तो 'work becomes fun'। ऐसा नहीं कि वो होने के बाद जो होगा उससे खुशी मिलेगी; ऐसा नहीं होता। The work becomes fun, work becomes Happiness, work becomes Bliss!

'तो यह करुँगा तो क्या होगा?', 'ऐसा मुझे बोला गया है तो?'- यह फिर हम लोग destination तक पहुँच जाते हैं सीधा हमेशा। ये सब हमारे mind का game है सब कुछ। Mind set जो है हमारा है सब, और कुछ भी नहीं है, सब सिर्फ़ mind-set है। कार्य वही करने हैं, करना वही 'हरे कृष्ण' है, reading वही करना है, सेवा वही करना है, पर यह mind-set को थोड़ा change करना है हमने। यह नहीं करेंगे तो बस कड़छी की तरह रहेंगे हमेशा।

'Actually our mind is our own prison'

'यह mind हमारा खुद का बनाया हुआ जेल है।'

तो यही जेल में ही घूमते रहते हैं बस..., limited conception- 'ऐसे ही होना चाहिए।' हमने..., सब के concept हैं न अपने-अपने। ये सबके जेल हैं अपने-अपने। सब अपने बनाए हुए जेल में घूमते रहते हैं। और क्या सोचते हैं कि यह परिस्थिति..., इस परिस्थिति में आऊँगा तो खुश हो जाऊँगा। मतलब एक जेल से दूसरे जेल में आ जाऊँगा तो खुश हो जाऊँगा। ऐसा नहीं होगा। जेल में व्यक्ति खुश नहीं हो सकता। तो अपने जो हमने conceptions बनाए हुए हैं, इनको हमने हटाना है तोड़ना है।

ठीक है तो अभी हम लोग..., यह तो अनन्त है topic, तो अभी इसको हम लोग विराम देंगे। कोई प्रश्न पूछना चाहते हैं तो you are welcome!